بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **11.09.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

मुसलमान होने की सुन्दरता तभी प्रकट होगी जब वह ईमान में दृढ़ हो तथा इस्लाम की वास्तविकता को समझता हो। ईमान यह है अपने आपको सञ्पूर्ण रूप से ख़ुदा तआला के हवाले कर दे और उसके आदेशों का पालन करने वाला हो तथा इस्लाम यह है कि अल्लाह तआला के आदेशों को ध्यान में रखते हुए अपने आपको भी प्रत्येक बुराई से बचा कर रखे और अन्य लोगों के लिए भी सलामती का सामान करे।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

एक व्यक्ति जब मुसलमान होने का दावा करता है उसके मुसलमान होने की सुन्दरता तभी प्रकट होगी जब वह ईमान में दृढ़ हो तथा इस्लाम की वास्तविकता को समझता हो। ईमान यह है अपने आपको सञ्पूर्ण रूप से ख़ुदा तआला के हवाले कर दे और उसके आदेशों का पालन करने वाला हो तथा इस्लाम यह है कि अल्लाह तआला के आदेशों को ध्यान में रखते हुए अपने आपको भी प्रत्येक बुराई से बचा कर रखे और अन्य लोगों के लिए भी सलामती का सामान करे। इस प्रकार यह सारांश है ईमान और इस्लाम का। यदि मुस्लिम दुनिया इस बात को समझ ले तो दुनिया में व्यापक शांति तथा सलामती स्थापित करने और फैलाने के ऐसे दृश्य दिखाई दें जो संसार को जन्नत बना दें।

इस युग में, इस वास्तविक ईमान को दिलों में स्थापित करने तथा वास्तविक इस्लाम के नमूने दिखाने के लिए अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा और आपके साथ सञ्बंध होने के बाद यही हमारा कर्त्तव्य है कि वास्तविक ईमान को स्थापित करते हुए इस्लाम का सञ्पूर्ण नमूना बनते हुए इस कार्य में आप अलैहिस्सलाम के सहयोगी एंव सहायक बनें। दुनिया को ईमान की सत्यता बताएँ तथा शांति फैलाने वाले बनें। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अहमदिया जमाअत अपनी व्यवस्था के द्वारा यह काम तो कर रही है, विश्व के प्रत्येक स्थान पर। परन्तु प्रत्येक अहमदी का कर्त्तव्य है कि वह अपने आपको इस्लाम की शिक्षा का नमूना बनाए ताकि हममें से प्रत्येक अपने दायित्व का निर्वाह करने वाला बने। आजकल मुसलमान देशों में दुर्भाग्यवश जो उपद्रव हो रहा है उसने इस्लाम को बदनाम किया हुआ है। काश कि मुसलमान देश इस बात को समझें कि उनके स्वार्थ ने इस्लाम को कितना आघात पहुंचाया है और कट्टर पंथी संगठन और गुट भी इसी कारण से उभरे हुए हैं कि हर स्तर पर स्वार्थ हो रहा है। देशों की शांति भंग हो रही है। न स्वयं अमन में हैं और न दूसरों को सलामती पहुंचा रहे हैं। न शासन लोगों के साथ न्याय कर रहा है, न जनता ही शासन का हक़ अदा कर रही है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्थान पर इन दोनों के असंतुलन पर चर्चा करते हुए फ़रमाया कि जब तक ये दोनों (अर्थात शासन के कर्त्तव्य तथा जनता के कर्त्तव्य) संतुलन के साथ चलते हैं तब तक उस देश में शांति रहती है और जब कोई असंतुलन जनता अथवा शासन की ओर से प्रकट होता है तभी देश से अमन उठ जाता है।

दुर्भाग्यवश यही कुछ हम आजकल अधिकांश मुस्लिम देशों में देख रहे हैं और फिर इस्लाम विरोधी शक्तियाँ भी इसके द्वारा अपने स्वार्थ प्राप्त कर रही हैं। एक ओर तो झगड़े बढ़ाने में दोनों की सहायता की जाती है तो दूसरी ओर कट्टर पंथी गुटों की गतिविधियों को ज़्याति देकर प्रेस और मीडिया अत्यधिक प्रचार करता है तथा यह कवरेज देकर इस्लाम को बदनाम किया जाता है। मैंने कुछ इन्टर व्यूज़ जो मीडिया को दिए उनमें एक बात यह भी कही थी कि इस्लाम के विरुद्ध घृणा फैलाने तथा इसे चरम पंथी और आतंकवादी धर्म के रूप में पेश करने में तुम जो मीडिया वाले हो, तुम्हारा भी हाथ है। मीडिया न्याय से काम नहीं लेता। किसी गुट अथवा देश के नेताओं के, जो अपने आपको मुसलमान कहते हैं, राजनैतिक स्वार्थ को तुम धर्म का नाम देकर फिर इस्लाम की शिक्षा को बदनाम करते हो तथा फिर इसको इतनी ज़्याति देते हो कि तुमने दुनिया में रहने वाले लागों की इस्लाम के विषय में विचार धारा ही बदल दी है अथवा जो इस्लाम को जानते नहीं उनके मस्तिष्क में इस्लाम के विषय में ऐसी सोच बना दी है, ऐसा भय खड़ा कर दिया है कि उनके मुंह इस्लाम का नाम सुनकर ही क्रोधित हो जाते हैं और जहाँ तुम्हारे अपने लाभ हों वहाँ समाचार दबा भी देते हो। हज़ारों लाखों मुसलमान जो अमन की बात करते हैं उनकी चर्चा मीडिया नहीं करता या उन्हें वह स्थान नहीं दिया जाता जो नकारात्मक सोच दिखाने वालों को मिलता है और सबसे बढ़कर तो अहमदिया जमाअत है जो मुहब्बत और प्यार की इस्लामी शिक्षा फैलाती है और पूरे विश्व में एक लगन से इस काम पर लगी हुई है जिसके फलस्वरूप अमन के झंडे तले, अमन फैलाने तथा सलामतली बिखेरने के लिए लाखों लोग हर साल जमाअत में शामिल होते हैं। उनके विषय में हम तुम्हें बताएँ भी तो तुम बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते। तो इस समय मैं ऐसे ही कुछ लोगों के उदाहरण पेश करता हूँ जिन्होंने अहमदिया जमाअत के द्वारा इस्लाम का वास्तविक चेहरा देखा और उनके दिलों पर प्रभाव पड़ा। इनमें ग़ैर-मुस्लिम भी शामिल हैं और फिर बहुत से ऐसे हैं जिन्होंने इस्लाम के सुन्दर चित्र को देखकर इस्लाम क़बूल किया तथा यह भी व्यक्त किया कि इस्लाम की इस सुन्दर शिक्षा की दुनिया को आवश्यकता है, मीडिया ने इस्लाम के

विषय में नकारात्मक प्रचार करके हमारे विचारों पर ताले लगा दिए थे। अहमदिया जमाअत ने फिर उनकी इन कुधारणाओं को दूर किया। चेरी बेनिन के स्पास्टलिक चर्च के पादरी ने वहाँ मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर खुल्लम खुल्ला इस बात को व्यक्त किया कि आज का दिन मेरे जीवन का अद्भुत दिन है, आज मुसलमान और मसीही एक स्थान पर बैठे हैं। निःसन्देह, अहमदिया जमाअत ने हम सबको एकत्र किया है, मैं अहमदियत को सलाम पेश करता हूँ।

फिर न्याय प्रिय राजनैतिज्ञ जो हैं उनपर जी जमाअत के इन कामों का बड़ा प्रभाव है। यहाँ जलसे के दिनों में भी आपके सामने कुछ लोगों ने अभिव्यक्ति की होगी। दुनिया में अब अल्लाह तआला की कृपा से अहमदिया जमाअत जो इस्लाम की शिक्षा प्रस्तुत करती है और जो काम कर रही है, जो क्रियाशील चित्रण है, उसका दुनिया में स्वागत किया जाता है। जमाअत की सेवाओं को लोग पसन्द करते हैं और अभिव्यक्ति देते हैं कि कैसी सुन्दर शिक्षा है। बैनिन के ट्रांस्पोर्ट मंत्री कहते हैं कि अहमदियत की मानव सेवाएँ जो बैनिन में हैं तथा जो अमन एंव प्रेम का प्रयास अहमदिया जमाअत ने किया है वह बैनिन देश में प्रथम स्थान पर है। मैं शांति एंव प्रेम के प्रयासों में अहमदिय्यत की सेवाओं का अभिनन्दन करता हूँ।

कबाबीर के मिश्नरी लिखते हैं कि कुछ दिन पूर्व हमारी मस्जिद के सामने एक यहूदी टीचर अपने स्कूल के बच्चों को लेकर जमाअत का परिचय करा रहे थे। वह टीचर सम्भतः अर्बी ज़ाषा भी जानते थे। हमारी मस्जिद के द्वार पर लिखा है कि وَمَنْ دَخَلَه كَانَ اٰمِنًا वह टीचर इन शब्दों का अनुवाद करके बच्चों को समझा रहे थे कि इस वाक्य का अर्थ है कि जो इसमें दाख़िल होगा अमन में रहेगा। कहने लगे कि इस वाक्य का क्रियान्वित नमूना केवल अहमदियों की मस्जिद में ही देखने को मिलेगा।

फिर अल्लाह तआला किस प्रकार लोगों का ध्यान जमाअत की ओर फेरता है। मोयो नामक एक स्थान है बैनिन में जहाँ समस्त रूप से ऐसे लोग आबाद हैं जो अल्लाह के साथ दूसरों को भी उसका साझी मानते हैं। हमारे मिश्नरी वहाँ तबलीग़ के लिए गए। जमाअत का परिचय कराने के बाद उन्होंने कहा कि यदि किसी के दिल में कोई सवाल हो तो करे। इस पर एक बुज़ुर्ग कहने लगे जब मैंने आपकी तक़रीर सुनी तो इस्लाम के विषय में मेरी सारी शंकाएँ दूर हो गईं और मैं पहला व्यक्ति हूँ जो इस्लाम और अहमदिय्यत को क़बूल करता हूँ, इन मुशरिकों में से। फिर इसके बाद इस गाँव में से चालीस लोगों इस्लाम अहमदिय्यत में शामिल हुए और यहाँ एक नई जमाअत स्थापित हो गई। उन लोगों में तुरन्त यह बदलाव पैदा हुआ कि पुरानी परम्पराओं को उन्होंने तुरन्त त्याग दिया। फिर एक दिन कहने लगे, अहमदी होने के बाद मेरे शरीर में एक प्रकार की नई आत्मा ने जन्म लिया है। मैं जहाँ भी हूँ मेरी आत्मा मेरे विवेक को जगाती है तथा कहती है कि नमाज़ का समय हो गया। तो यह पाबन्दी उन लोगों में नमाज़ के लिए पैदा हो चुकी है और कहते हैं इस प्रकार मेरी आत्मा को शांति और शरीर को आराम मिलता है। अतः हममें से भी जो नमाज़ में सुस्त हैं उनको याद रखना चाहिए कि नए आने वाले इबादतों की ओर भी लगाव रखने वाले हैं तथा बड़े ध्यान पूर्वक पढ़ते हैं नमाज़ें।

आज इस्लाम की वास्तविक शिक्षा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा ही विश्व को पहुंच सकती है। किस प्रकार अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को दुनिया में पहुंचा रहा है तथा किस प्रकार लोगों पर प्रभाव होता है। एक घटना पेश करता हूँ जो गिनी कनाकरी की है। वहाँ पर हमारे एक अहमदी दोस्त अबू बकर साहब ने तबलीग़ के विषय में गोष्ठियों की व्यवस्था की। कहते हैं यह मुरब्बी कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम उन लोगों को पहुंचाया। अभी तबलीग़ का क्रम चल ही रहा था कि वहाँ एक मौलवी पहुंच गया उपद्रव फैलाने के लिए। कुछ देर तक तो चुपचाप बातें सुनता रहा उसके बाद बड़े क्रोधित होकर यह कहा कि तुम्हें यहाँ तबलीग़ की अनुमति नहीं है और मैं तुम्हें पुलिस के द्वारा अभी यहाँ बन्द कराता हूँ। वहाँ के नौजवान खड़े हो गए और उस मौलवी को बड़े क्रोध से कहा कि तुम तो अभी तक हमें भटकाते रहे हो इस लिए तुरन्त यहाँ से चले जाओ। इस प्रकार वह मौलवी वहाँ से बड़ा लज्जित होकर गया और इसके फलस्वरूप जो मज्लिस वहां लगी थी उसमें से पन्द्रह लोग जमाअत में शामिल हो गए।

फिर गिनी कनाकरी का ही एक वृत्तांत है कि जब हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने का उद्देश्य बयान किया और आपके आगमन के विषय में बताया और यह भी बताया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़विष्य वाणी की थी कि अन्तिम युग के ये निशान होंगे तथा उसमें मसीह मौऊद प्रकट होंगे तो इस आश्चर्य जनक बात का प्रभाव हुआ लोगों पर। स्थानीय मिश्नरी ने तबलीग़ जारी रखी और कहते हैं अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से एक सप्ताह में न केवल वह गाँव अपने इमाम और मस्जिद सहित अहमदिय्यत में दाख़िल हुआ बल्कि निकटवर्ती चार पांच गाँव बैअत करके अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम में दाख़िल हो चुके हैं और अज़ी आगे सम्पर्क हो रहे हैं तथा निरन्तर हमें, कहते हैं पैग़ाम मिल रहे हैं कि लोग वास्तविक इस्लाम में दाख़िल होने के लिए व्याकुल हैं।

एक स्थान पर अफ्रीक़ा में एक बुक स्टाल लगाया गया, क़ुरआन-ए-करीम की प्रदर्शनी थी। दो मुसलमान नौजवान आए, उन्हें जब अहमदियत का परिचय कराया गया और बताया गया कि इमाम मेहदी अलैहिस्सलाम आ चुके हैं तथा उन्हें फ्रैंच भाषा में सदाक़त-ए-मसीह अलैहिस्सलाम नामक पुस्तक पढ़ने के लिए दी गई और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अन्तिम युग के विषय में जो मुसलमानों की बुरी दशा है उससे सम्बंधित हदीसें पेश की गईं और मसीह के दोबारा आने पर चर्चा की गई, अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम के विषय में बताया गया। अर्थात वह वास्तविक इस्लाम जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लाए थे। आज तो मुसलमानों ने इसकी शकल

ही बिगाड़ दी है कि इस्लाम क्या है? जिसमें मुहब्बत है, अमन है, भाईचारे की शिक्षा है। इस पर वे दोनों नौजवान कहने लगे कि हम आस्था की दृष्टि से तो अवश्य मुसलमान हैं परन्तु मुसलमानों के आतंक तथा अत्याचार से इतने तंग आ गए थे कि हम तो ईसाई होने लगे थे परन्तु अब अहमदिया जमाअत की बातें सुनकर संतोष हो गया है कि इस्लाम ऐसा नहीं है जैसा ये मुल्ला लोग पेश करते हैं। उन्होंने हमारा धन्यवाद किया कि आपने हमें ईसाई होने से बचा लिया, इस्लाम छोड़ने से बचा लिया।

ग़ैर मुस्लिमों के दिलों में भी वास्तविक इस्लाम को देखकर इस पैग़ाम को फैलाने की इच्छा उत्पन्न होती है वे भी हमारा साथ देने लग जाते हैं। जापान के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक बुद्धिस्ट जापानी हमारे स्टाल पर आए जब उन्हें इस्लाम का परिचय कराया गया तथा अन्य धर्मों के विषय में इस्लाम की शिक्षा के नमूने क़ुरआन करीम की आयतों से दिखाए तो उन्होंने न केवल हमारा धन्यवाद किया बल्कि कहने लगे कि यह सुन्दर शिक्षा इस योग्य है कि दुनिया को बताई जाए तथा इस्लाम के सम्बंध में कुधारणाओं को दूर किया जाए। अतः एक दिन वे हमारे स्टाल पर फिर आए और सुबह दस बजे से शाम चार बजे तक ऊँची आवाज़ से, इसके बावजूद कि वे बुद्धिस्ट थे, बुलन्द आवाज़ से यह घोषणा करते रहे कि इस्लाम अमन का धर्म है तथा फ़ोल्डर्स बाँटते रहे।

इसी प्रकार इन्डिया में कर्नाटक में एक स्थान है, गदक में एक बुक स्टाल लगाया गया। इस बुक स्टाल पर एक ग़ैर मुस्लिम दोस्त आए और कहने लगे कि हमने इससे पहले भी अनेक स्टाल देखे हैं परन्तु अमन और शांति का पैग़ाम देने वाले तथा इस्लाम की सुन्दर शिक्षा को लोगों तक पहुंचाने वाले ऐसे लोग मैंने आजतक नहीं देखे। वे बड़े प्रभावित हुए और हमारे बुक स्टाल से बहुत सी किताबें ख़रीद कर ले गए।

लगज़म बर्ग नगर में प्रदर्शनी के अवसर पर जमाअत की ओर से बुक स्टाल लगाया गया। प्रदर्शनी के अवसर पर नगर के मेयर भी स्टैंड पर आए और विभिन्न पुस्तकें देखीं। इसके पश्चात लगज़म बर्ग की जमाअत के सदर ने उन्हें जमाअत का संक्षिप्त परिचय कराया, उनको एक किताब भी भेंट के रूप में दी। इस पर मेयर ने कहा कि आपका समुदाय बड़ा अच्छा काम कर रहा है आपको चाहिए कि इस्लाम के सुन्दर चित्र को जल्दी से जल्दी दुनिया में फैलाएँ।

एक टूटे हुए दिल वाले नए मुसलमान की घटना पेश करता हूँ। अमीर साहब हॉलैंड ने लिखा है कि हॉलैंड के एक ज़च मुसलमान बिलाला साहब मुसलमानों की बुरी दशा देखकर दिल छोटा कर बैठे थे। कहते हैं कि मैं अहमदिया जमाअत से बड़ा प्रभावित हुआ हूँ। अल्लाह तआला ने मुझ पर अहमदियत की सत्यता प्रकट की है और मुझे बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली। अब मैं जमाअत के प्रोग्रामों में शामिल होता हूँ तथा रूहानी तौर पर प्रगति अनुभव करता हूँ जो व्याकुलता पहले थी वह भी समाप्त हो रही है।

फिर क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा का अन्य लोगों पर कैसा प्रभाव होता है यह भी। कैनेडा से हमारे एक दोस्त लिखते हैं दाअी इलल्लाह (अल्लाह के रास्ते की ओर बुलाने वाले) कि हमने एक तबलीग़ी बुक स्टाल लगाया। एक अंग्रेज़ पति पत्नि हमारे स्टाल पर आए, पत्नि बड़ी कट्टर ईसाई थी वह इस बात के लिए हठ कर रही थी कि क़ुरआन-ए-करीम नहीं ख़रीदना, पति को कहती रही। वह साहब कहने लगे कि क़ुरआन करीम की कोई ऐसी बात बताएँ कि वह क़ुरआन करीम लेने के लिए तैय्यार हो जाए। तो कहते हैं कि मैंने उन्हें कहा कि क़ुरआन मजदी में एक सूरत है जिसमें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तथा उनकी माता हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम का वर्णन है, उनके विषय में ऐसा विवरण है जो आपको बाईबिल में नहीं मिलेगा और वह पृष्ट निकाल कर उनके आगे रख दिया, अनुवाद था, उनकी पत्नि पढ़ने लगीं। कुछ समय बाद कहने लगीं कि सचमुच बड़ी दिलचस्प किताब है, हमने तो प्रेस में पढ़ा था अर्थात मीडिया ने हमें यह बताया हुआ था, अख़बारों ने हमें यह बताया हुआ था कि क़ुरआन घृणा से भरा हुआ है परन्तु इसमें तो ईसा अलैहिस्सलाम तथा उनकी माता का बड़े प्रेम पूर्वक वर्णन किया गया है अतः उन्होंने क़ुरआन-ए-करीम ख़रीद लिया। कुछ सप्ताह के पश्चात वे पुनः स्टाल पर से गुज़रे तो धन्यवाद देते हुए कहने लगे कि हमने क़ुरआन करीम को पढ़ा है। मीडिया में इस्लाम और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विषय में जो घृणा फैलाई जा रही है यदि कोई क़ुरआन करीम पढ़े अथवा इस पर एक उचटती हुई नज़र ही डाले तो इसकी सारी आशंकाओं का निवारण हो जाता है।

बैनिन में एक बुक स्टाल के आयोजन पर एक सरकारी स्कूल के टीचर आए और जमाअत की मुहब्बत और अमन की शिक्षा पढ़ी तो कहने लगे मुझे अपने विद्यार्थियों के लिए भी लिट्रेचर दें। मैं चाहता हूँ कि वे भी इस लिट्रेचर का अध्ययन करें और समाज अमन और प्रेम से भर जाए। नेक प्रकृति के मुसलमानों पर भी अहमदिया जमाअत के निज़ाम को देख कर जो वास्तव में इस्लाम की व्यवस्था है, प्रभाव होता है और फिर यही बात उनके लिए मार्ग दर्शन का कारण बन जाती है। बर्कीना फ़ासो के मुरब्बी कहते हैं कि एक स्थान है स्लागो, वहाँ तबलीग़ के लिए गए तो सारे पुरुष एंव महिलाएँ तबलीग़ सुनने के लिए एकत्र हो गए। कहते हैं एक दोस्त ज़िक्रिया साहब आए और कहने लगे कि मैंने कुछ समय पूर्व एक सपना देखा था कि मैं चन्दा दे रहा हूँ और एक आवाज़ आती है कि चन्दा ऐसे इस्लामी समुदाय को दो जिसका एक बैतुल माल हो। मैं काफ़ी समय से यह इस्लामी समुदाय ढूंड रहा था लेकिन जब मुरब्बी साहब ने जमाअत के माली निज़ाम के सम्बंध में बताया तो मुझे उन शब्दों का स्वप्न-फल मिल गया जो मैंने सपने सुने थे। अतः श्रीमान जी ने उसी समय दस हज़ार फ्रांक सीफ़ा निकाल कर अदा कर दिए। जब लोगों ने इस सपने के विषय में सुना और यह भी देखा कि विधिवत् चन्दे की एक रसीद बुक होती है जिसपर पूरा रिकार्ड रखा जाता है तो बड़े प्रभावित हुए। अल्लाह तआला की कृपा से इसके बाद उस गाँव में 282 लोगों ने बैअत कर ली तथा विधिवत् ये सब लोग जमाअत

के चन्दे के निज़ाम में शामिल हैं।

गोएटे माला में ज़्लायर बांटने के समय एक नौजवान यूसुफ़ से सम्पर्क हुआ, मिशन हाउस आए, अहमदियत क़बूल की। उन्होंने कुछ समय पहले ही इस्लाम क़बूल किया था। कहते हैं कि ग़ैर अज़-जमाअत की मस्जिद में जाकर शांति नहीं मिली। लोग आपस में एक दूसरे के साथ द्वेष एंव घृणा रखते हैं। एक दिन मैं जब दुआ करके सोया तो सपने में एक बुज़ुर्ग देखे जो अत्यंत आध्यात्मिक चेहरे वाले थे। एक रास्ता है जिस पर राज़ा ही राख है। ये बुज़ुर्ग मेरे सामने चलने लग जाते हैं और संकेत करते हैं कि मेरे पीछे चलो। इन बुज़ुर्ग के चलने से राख वाला रास्ता साफ़ होता जा रहा है। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चित्र दिखाया गया तो उन्होंने कहा कि यही वे बुज़ुर्ग थे जो उन्हें सपने में रास्ता दिखा रहे थे और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस बात ने उनको ईमान में और अधिक व्यापक कर दिया है।

फ्रांस के अमीर साहब लिखते हैं कि एक नौमुबाए दोस्त कमाल साहब ने बताया कि मैं कई वर्षों से पारम्परिक मुसलमान था और आलिमों की ओर से क़ुरआन की जो व्याज़्या की जाती थी उस पर संतुष्ट नहीं था। कहते हैं उनके बहनोई ने उनसे अहमदिया जमाअत के विषय में वर्णन किया तथा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ीअल्लाह अन्हु की तफ़सीर पढ़ने को कहा। मैंने जब तफ़सीर पढ़ी तो मैं दंग रह गया कि इतनी सरल एंव स्पष्ट तफ़सीर चौदा सौ वर्षों में किसी ने क्यूँ नहीं लिखी। इसके बाद एम टी ए और इन्टर नैट पर मैंने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अनेक पुस्तकें पढ़ीं और कई प्रोग्राम देखे। मुझे ऐसा लगा कि मेरे हाथ कोई ख़ज़ाना लग गया है और मेरी आत्मा को स्वतंत्रता मिल गई है मेरी समस्त आशंकाएँ दूर हो गईं और वास्तविक इस्लाम को जान लिया, अतः बैअत कर ली।

दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में जब जमाअत के द्वारा इस्लाम का पैग़ाम पहुंचता है जो मुहब्बत और अमन और सलामती का पैग़ाम है तो नेक प्रकृति वाले उसे क़बूल करते हैं। मुबल्लिग़ इंचार्ज, गोएटे माला के लिखते हैं कि लीफ़ लैट्स बाँटने की परिणाम स्वरूप 91 लोगों को इस्लाम क़बूल करने की तौफ़ीक़ मिली। अहमदियत क़बूल करने वालों में एक पादरी हैं जो 33 साल तक कैथोलिक चर्च और 5 साल प्रोस्टंट सम्प्रदाय से सम्बंधित रहे। इसी प्रकार एक अन्य साहब जो ज़्यूंसपैल्टी में जज के पद पर नियुक्त हैं, डोमंगो साहब, उन्होंने अहमदियत क़बूल करने के बाद अपने क्षेत्र में एक तबलीग़ी गोष्ठि का प्रबन्ध किया जिसमें बड़े विस्तार पूर्वक इस्लाम की शिक्षा बयान की गई, प्रश्नोत्तर हुए, कहते हैं यह गोष्ठि सात घन्टे तक जारी रही। मज्लिस की समाप्ति से पहले ही सभी उपस्थित लोगों ने इस्लाम क़बूल करने की घोषणा की जिनकी संज़्या 89 थी, उनमें पुरुष और महिलाएँ सभी सम्मिलित थे।

अतः यह पौधा, इस्लाम का पौधा है, अल्लाह तआला का लगाया हुआ पौधा है और इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणी के अनुसार इसकी सिंचाई के लिए उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा है और क़यामत तक आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से लाभान्वित होते हुए आपके फ़ैज़ के द्वारा अल्लाह तआला इसके लिए पानी का प्रबन्ध करता रहेगा, इन्शाअल्लाह तआला, और सदैव यह पौधा इन्शाअल्लाह हरा भरा और प्रफुल्लित रहेगा। दुनिया को अल्लाह तआला की इच्छानुसार चलाने के लिए तथा सलामती और मुहब्बत बिखेरने के लिए ये कुछ वृत्तांत मैंने पेश किए। हज़ारों घटनाएँ हैं जो हमारे ईमान को शक्ति प्रदान करते हैं, सामने आते रहते हैं, किस प्रकार अल्लाह तआला लोगों के सीने खोलता है, किस प्रकार ग़ैरों के मुंह से हमारे समर्थन में बातें निकलवाता है। कोई अफ्रीक़ा का रहने वाला है तो कोई अरब का, कोई योरूप का, कोई साउथ अफ्रीक़ा का। परन्तु सब पर एक जैसा प्रभाव है इस लिए कि अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा एक ही है और वह इस्लाम की शिक्षा है। प्रत्येक न्याय प्रिय, चाहे वह तुरन्त इस्लाम को क़बूल करे या न करे परन्तु इस बात के कहने पर विवश है कि दुनिया के अमन की इस्लाम ही ज़मानत है। कोई न्याय प्रिय, स्वार्थी मुसलमान लीडरों या लोभी, आतंकी गुटों की प्रतिक्रिया को इस्लाम की शिक्षा का अंश नहीं मानता, वही इसको कहेगा जिसमें न्याय नहीं है। इस्लाम विरोधी शक्तियाँ चाहे जितना भी इस्लाम के विषय में नकारात्मक प्रचार करें लेकिन इस्लाम ने ही दुनिया को अल्लाह तआला की निकटता के रास्ते दिखाने हैं और अमन तथा सलामती उपलब्ध करनी है। आज नहीं तो कल दुनिया को यह स्वीकार कना पड़ेगा कि इस्लाम ही दुनिया के अमन और शांति की ज़मानत है।

अल्लाह तआला हमें भी तौफ़ीक़ दे कि हम इस सफलता के भागीदार हों और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को कई गुना बढ़ कर देखने वाले हों और अपने कर्मों को इस्लाम की शिक्षानुसार ढालने वाले हों। आमीन

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 11.09.2015

सैय्यदना हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से मजलिस अन्सारुल्लाह भारत दिनांक 25 जौलाई से 15 अक्तूबर 2015 तक अपनी डायमंड जुबली मना रही है

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*